

पद २६३

(राग: यमन - ताल: त्रिताल)

कुबरी कंस की दासी । वोसंग जावयाको जान । ऊधो हमसे बने
हैं बेईमान ॥ध्रु.॥ हम जाने ऐसी ना भयोगी । बोलत मधुर
वचन ॥१॥ मानिक के प्रभु नाथ कृष्णजी । गोपी ब्रिजको जीवन
प्राण ॥२॥